मजूरी के लिए बाहर नहीं जाती बुधनी

शिकोह अलबदर

समूह के माध्यम से मैंने रोजगार अर्जित किया है और अपने पति को भी रोजगार उपलब्ध कराया है, अब वह बाहर दूसरे राज्य मजदूरी के लिए नहीं जाते हैं. हम अब दूसरे लोगों को भी रोजगार देने में सक्षम हैं- ये शब्द हैं रांची जिला के अनगड़ा प्रखंड के रेसम बनादाग की निवासी बुधनी कच्छप के. बुधनी कच्छप उन हजारों महिलाओं में से एक हैं जिन्होंने झारखंड राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा संचालित परियोजना के अंतर्गत चलायी जाने वाली स्वयं सहायता समूह के कार्य को पूरी गंभीरता से समझा और अपने जीवन को संवारा. समूह की सहायता से जीविकोपार्जन करने वाली कई महिलाओं ने अपनी बातें आजीविका मिशन द्वारा रांची के कांके स्थित विश्व प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित आंतरिक सीआरपी के कार्यकलापों पर चर्चा सभा के दौरान कही. इस सभा में रांची जिला के दूसरे प्रखंडों में जाकर स्वयं सहायता समूह गठित करने पर महिलाओं की समझ विकसित और प्रशिक्षण देने वाली सक्रिय महिलाओं ने भी अपने अनुभव साझा किये. आंतरिक सीआरपी (कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन) के काम करने के तरीकों पर विस्तृत चर्चा के दौरान आजीविका के मुख्य कार्यकारी पदाधिकारी परितोष उपाध्याय, राज्य परियोजना प्रबंधक श्रीमंत पत्र के साथ कार्यक्रम से जुड़े राज्य तथा जिला स्तर के अन्य पदाधिकारी भी मौजूद थे.

नये स्वयं सहायता समूह को तैयार करने तथा पुराने समूहों को और अधिक मजबूत बनाने के उद्देश्य से रांची जिला के अनगड़ा तथा नामकुम प्रखंड के बीस सदस्यों की चार आंतरिक कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन की टीम को बुंडू प्रखंड भेजा गया था. बुंडू में प्रशिक्षण देने के लिये गयी महिलाओं को आंध्र प्रदेश की महिलाओं से समूह के गठन और विकास के लिये प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था. इन समूहों ने तीस दिनों की अवधि में तैमारा,अदलहातू, ताऊ तथा कांची में काम कर रहे कलस्टर को प्रशिक्षण दिया. इन टीमों द्वारा वहां तैयार किये गये नये समूह में शामिल सक्रिय महिलाओं तथा रजिस्टर में लेखा-जोखा कर सकने वाली महिलाओं की पहचान कर उन्हें समूह चलाने के लिये आवश्यक आधारभूत बातों पर प्रशिक्षण दिया गया था. सीआरपी टीम ने इसी विषय के संबंध में कार्यों की समीक्षा तथा मूल्यांकन आयोजित सभा के विभिन्न सत्रों में किया गया. साथ ही टीम ने ग्रामीण महिलाओं के अनुभवों को साझा किया.

चर्चा सभा में भाग लेती महिलाएं

बुंडू में प्रशिक्षण देने के लिये गयी महिलाओं को आंध्र प्रदेश की महिलाओं से समूह के गठन और विकास के लिये प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था

बुधनी कच्छप

झारखंड राज्य आजीविका मिशन के अंतर्गत परियोजना के कार्यक्षेत्रों में अत्यंत गरीब तथा वंचित परिवारों के सामाजिक तथा आर्थिक विकास, सामाजिक जागरूकता लाने तथा सामुदायिक संगठनों को सशक्त करने के उद्देश्य से सामुदायिक स्रोत व्यक्ति (कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन) की नीति को अपनाया है. परियोजना के सुचारु एवं सफल क्रियान्वयन के लिये आंध्रप्रदेश मॉडल की तर्ज पर ही स्वयं सहायता समूह के सदस्यों को राज्य में प्रशिक्षण दिया जा रहा है. प्रशिक्षण दिये जाने के बाद स्वयं सहायता समूह के सदस्य अपनी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाने में एक सफल उदाहरण प्रस्तुत कर रही हैं. राज्य आजीविका मिशन की सीआरपी योजना के माध्यम से अपने कार्यक्षेत्र में सीआरपी की टीम का निर्माण कर स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गरीब महिलाओं को जोड़ने, संगठनों को प्रशिक्षण देने, आजीविका के संसाधनों की पहचान, महिलाओं के अधिकार एवं कौशल संवर्धन, जोखिम उठाने की क्षमता को विकसित करने तथा वित्तीय ज्ञान उपलब्ध कराने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है.

झारखंड राज्य आजीविका मिशन में सीआरपी की भूमिका

एक माह पूर्व सीआरपी नीति के तहत राज्य आजीविका मिशन के सहयोग से आंध्र प्रदेश की स्वयं सहायता समूहों के कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन द्वारा झारखंड के रांची तथा पश्चिमी सिंहभूम के परियोजना क्षेत्रों में ग्राम प्रवेश, वातावरण निर्माण, जागरूकता, एवं समूह के गठन पर महिलाओं को प्रशिक्षित किया गया था. प्रशिक्षण के लिए चयनित महिलाएं सीआरपी राउण्ड के प्रारंभिक स्तर में ग्राम प्रवेश, वातावरण निर्माण, जागरूकता एवं अत्यंत गरीब परिवार की पहचान और स्वयं सहायता समूह बनाने में सहयोग करने, समूहों का गठन कर सामुदायिक संगठनों को मजबूत करने हेतु परियोजना वाली विभिन्न गांवों में 5 सदस्य वाली सीआरपी टीम जिसमें तीन सक्रिय महिलाएं तथा दो ऋण का लेखा-जोखा कर सकने वाली महिलाओं की टीम तैयार करती हैं. इन दलों को 15 दिनों तक एक गांव में स्थापित कर परियोजना के नीतियों के अनुसार काम करवाया जाता है. तीस दिनों की अवधि वाले इस राउण्ड में प्रत्येक दल 15 दिनों के बाद दूसरे गांव स्थानांतरित कर दिया जाता है.

पांचवें चरण में पहुंचा सीआरपी राउण्ड

झारखंड राज्य आजीविका मिशन में सीआरपी राउण्ड के अंतर्गत अनगड़ा प्रखंड में 45 तथा नामकुम प्रखंड में 33 गांवों में चार चरणों का सीआरपी राउण्ड पूरा किया जा चुका है और वर्तमान में 5वां चरण संचालित किया जा रहा है. दिसंबर माह में ग्राम संगठनों के निर्माण हेतु पहला चरण प्रारंभ किया जाना प्रस्तावित है.

राज्य आजीविका मिशन के अंतर्गत इन दो प्रखंडों के कुल 78 गांवों में 728 स्वयं सहायता समूहों का गठन किया गया. 724 पुस्तक संचालकों का चयन एवं प्रशिक्षण उपलब्ध कराया गया जिसमें 636 पुस्तक संचालक कार्यरत हैं. साथ ही 156 सक्रिय महिलाओं को चयनित किया गया जिसमें से 85 कार्यरत हैं. इसी क्रम में 103 आंतरिक कम्युनिटी रिसोर्स पर्सन का चयन किया गया जिसमें 25 को प्रशिक्षण दिया गया और इनमें से 20 सक्रिय महिला के रूप में समूह के विकास में अपना योगदान दे रहीं है.

चर्चा सभा में विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से आयी सक्रिय महिलाओं ने समूह के पंचसूत्र, समूह से जुड़ने के लाभ, समूह से आर्थिक समस्या का समाधान, ऋण का लेन-देन आदि से संबंधित जरूरी जानकारियों को पदाधिकारियों के साथ साझा किया. सक्रिय महिलाओं ने यह बताया कि समूह से जुड़ने वाली अधिकांश महिलाओं ने हस्ताक्षर करना भी सीख लिया है जिसे स्वयं सहायता समूह की महिलाएं अपनी उपलब्धि मान रही हैं.

समूह से मिला कठिन घड़ी में साथ और खुद का रोजगार

रांची जिला के अनगड़ा प्रखंड का एक गांव है बहेया. यहीं की एक महिला है सिसेलिया गाड़ी. सिसेलिया के जीवन में एक कठिन मोड़ तब आया जब विवाह के एक वर्ष बाद ही उनके पति की मृत्यु हो गयी. यह समय उनके लिये सबसे तकलीफ भरा था. सिसेलिया बताती हैं कि मैट्रिक पास करने के बाद ही उनकी शादी कर दी गयी थी. ससुराल गई तो पता चला कि परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है. पति अपनी पढ़ाई के साथ साथ जीविका के लिए एक छोटी दुकान चलाते थे. पैसे की कमी होने के कारण बड़े दुकान से भी कभी कभी उधारी सामान लाना पड़ता था. शादी के एक साल बाद पति को चोट लगने और पैसे के अभाव में सही इलाज न करा पाने के कारण मृत्यु हो गयी. पति की मृत्यु के बाद ससुराल वालों ने भी

साथ नहीं दिया. खाने और रहने की हमेशा दिक्कत होने लगी थी. साथ में एक बच्चा भी था. इस बीच वह अपने नैहर नामकुम चलीं गयीं. वह कहती हैं कि कुछ समय के लिये तो मेरा सब घर उजड़ गया था लेकिन फिर उन्होंने फैसला किया वह अपने ससुराल जायेगी और वहीं अपने बच्चे को किसी स्कूल में नामांकन करा देंगी. नैहर रहने के दौरान उन्होंने अपनी रोजी रोटी के लिए सिलाई का प्रशिक्षण लिया था जिसका वह अपने ससुराल में रहकर उपयोग कर रहीं थीं. सिसेलिया बताती हैं कि इसी बीच आजीविका मिशन के तहत चलने वाली स्वयं सहायता समूह का पता चला. समूह की दीदी लोग ने समूह से जुड़ने के लिए प्रेरित किया और बताया कि समूह सभी प्रकार की समस्या का समाधान करने में मदद करेगा. समूह में जुड़ जाने से उन्हें एक नया विश्वास मिला और खुद को ससुराल में टिका सकी. आजीविका के स्वयं सहायता समूह के माध्यम से सिसेलिया ने ऋण लिया और अपना रोजगार करना प्रारंभ किया. सिलाई के साथ मुर्गी पालन भी किया. अपने बेटा को आइटीआइ में दाखिला दिलाया. अब धान कूटने की मशीन लगाने की योजना है और लाह की खेती को बढ़ाना है. वह कहती है कि आजीविका मिशन की स्वयं सहायता समूह के कारण ही वह आज स्वरोजगार अर्जित करने में सक्षम हो सकी हैं.

2014

पंचायतों की पहल के कारण पहाड़िया आदिम जनजाति के जीवन में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक बदलाव लाया गया.